P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-4* ISSUE-2* May (Part-1)- 2019
E: ISSN NO.: 2455-0817 *Remarking An Analisation*

जनपद पौड़ी गढ़वाल में उत्प्रवास की भूपर्यावरणीय पृष्ठभूमि

अर्चना
असिस्टेंट प्रोफेसर,
भूगोल विभाग,
टी0एस0आर राजकीय महाविद्यालय, नैनीडाण्डा,
पटोटिया, पौडी गढ़वाल,
उत्तराखण्ड, भारत

सारांश

पौड़ी नगर उत्तर रेवले के निकटतम रेवले स्टेशन कोटद्वार से 117 किलोमीटर तथा हरिद्वार से मोटर मार्ग पर 157 किलोमीटर की दूरी पर अवस्थित है। यह सागर तट से लगभग 6000 फीट की ऊँचाई गढ़वाल के द्वार हरिद्वार–ऋषिकेश से होते हुए देवप्रयाग–श्रीनगर से मात्र तीस किलोमीटर की दूरी पर सीढ़ीनुमा खेत सर्पीली सड़क एवं चीड और देवदार के घने जंगलों के मध्य हिम मण्डित चोटियों से घिरा हिमालय की गोद में पौडी बसा है। यह अपने नैसर्गिक सौन्दर्य से सैलानियों का बरबस अपनी ओर आकर्षित कर लेता है। दूर–दूर तक प्राकृतिक सुन्दरता से परिपूर्ण छोटी–बडी पर्वत श्रृंखलाओं का अनोखा दृश्य दूर तक पहाडियों घाटियों में घरोदेनुमा मकान यह सब अविस्मणीय है। नगर बस अड्डे से आधा किलोमीटर खडी चढ़ाई पर लगातार बनी पौडी (सीढ़ी) जो पौढ़ी नामकरण में जनपद को प्रसिद्ध किया है कण्डोलिया मैदान,वहॉ कण्डोलिया देवता का मन्दिर अनायास ही सैलानियोंका ध्यान अपनी और खीच लेता है। इस मन्दिर में आज भी आसःपास के अनेकानेक गॉव श्रद्वापूर्वक भूमिरक्षक के रूप में देवता का पूजन करते है। किंवदन्ती है कि गोरखाली शासन के समय विपत्तिय काल में यह कण्डोलिया देवता आवाज देकर गॉवासियों को शत्रु के आक्रमण से सजग करता था।

मुख्य शब्द : उत्प्रवास, पौड़ी गढ़वाल, भूपर्यावरणीय पृष्ठभूमि।

प्रस्तावना

कण्डोलिया से दिखने वाली घाटी, हरे–भरे मीलो तक फैले लहलहाते खेत चीड, देवदार, वॉझ, बुरांश एवं खडीक आदि से घने जंगल, कल–कल करती नदियॉ झर–झर करते 6500 की ऊचाई पर स्थित रांशि का विशाल मैदान यह सब कम आकर्षक नही है। पौडी से 6 किलोमीटर खाण्ड्यूसैंस की ओर 7600 फीट ऊँची कुमाऊ चोला (कुमाऊचूला) चोटी, जहॉ आज भी भाग्नाशेष रूप में खण्डहर कुमाऊँ राजा के गढ़ का प्रमाण दे रहे है और मनोमोहक जंगल के बीच (मध्य) नामदेव का प्राचीन मन्दिर प्राणीमात्र को भाव– विभोर कर देता है।

पौडी की सबसे ऊँची चोटी झिण्डीधार जिसकी ऊँचाई 7000 फीट है से सेमुखेम पर्वत के पॉचगढ़ हाथी, पर्वत, लेन्सडॉन, चौखम्बा, त्रिशूल, भरत कंठ, नीलकंठ व बंदर पूछ जैसे चोटियों के स्पष्ट दृष्टिगोचर होती है, अपितु गंगोत्री, भागीरथी जैसे पुण्य स्थलों के दर्शन भी होते है नगर से पश्चिम की ओर तीन किलोमीटर दूर सात हजार फीट की ऊँचाई पर क्यूँकालेश्वर का शिव का ऐतिहासिक मन्दिर अपनी धार्मिक आस्था के साथ प्राकृतिक छटा बिखेरती नजर आती हैं केदारखण्ड में इसके महत्व का वर्णन मिलता है यह सिद्व पीठ कहा जाता है यहां से हिमालय की सर्वाधिक हिमाछादित पहाड़ियॉ एवं चोटियॉ दिखाई देती है यहॉ पर खड़ा सैलानी अपने आप को चारों ओर से शुभ्र हिमाच्छादित पर्वत शिखरों गोद में पाता है।

सन् 1815 तक पौडी की स्थिति एक गॉव की सी थी यह गॉव आज भी पौडी शहर के नीचे अपने ऐतिहासिक रूप से विद्यमान है 1815 के पश्चात अंग्रेजों ने पौडी को ब्रिटिश गढ़वाल के नागरिक प्रशासन की अदालत के लिए चुना राजशाही के दौरन पौडी व इसके समीपवर्ती च्वींचा, बैजवाड़ी रॉई आदि गॉवों से एकत्र हुआ टैक्स क्यूँकालेश्वर श्रीनगर के कमलेश्वर मन्दिर के पुरोहितो के पास जाता था जमीन पर जनता का कोई अधिकार नही था। सम्पूर्ण भूमि का स्वामी राजा था। जनता का काम केवल जमीन पर हल जोतना था।

अध्ययन क्षेत्र का चयन

1805 से 1815 तक गोरखों ने सम्पूर्ण गढ़वाल का हस्तगत कर यहॉ की प्रजा पर अनेकों अत्याचार किये। पौडी भी इससे अछूता नही रहा। गढ़वाल नरेश सुदर्शशाह ने गोरखों को खदेड़ तो दिया परन्तु युद्व व्यय के रूप गढ़वाल

नरेश को अपनी राजधानी श्रीनगर ले जानी पड़ीं सन् 1815 से 1840 तक पौडी, कुँमाऊ, कमिशनरी के आधीन रहा 1840 तक नैनीताल व अल्मोड ही जिले के रूप में थे 1840 में पौडी की भौगोलिक स्थिति व जलवायु को मद्दे नजर रखते हुए पहली बार जिले का रूप दिया गया और पौडी के डिप्टी कमीश्नर की अदालत स्थापित की गयी इस अदालत में पूरे ब्रिटिश गढ़वाल के मुकदमों की सुनवाई होती थी सन् 1854 में पौडी में अमेरिकन एपिस्कोपल मेथोडिस्ट चर्च की स्थापना की गई पौडी में पहली शिक्षण संस्था सन्1865में खेरेन्द्र हेनरी मेंसल द्वारा प्रारम्भ करवायी गयी यह स्कूल चर्च के समीप पण्डित पुरूषोत्तम चन्दोला इस स्कूल के पहल हेड मास्टर थे इस स्कूल को जे0 एन0 मिडिल तक शिक्षा दी जाने लगी इसी स्कूल को जे0 एन0 मेस्योर की स्मृति में 1884 में मेस्योर स्कूल का नाम दिया गया सन् 1902में यह हाई स्कूल बना और बाद में यह इन्टर कालेज में तबदील हो गया सन् 1928 तक सम्पूर्ण पौडी जंगलों से घिरा हुआ था वर्तमान धारा रोडमें झोपडियॉ थी जिनमें उनके जानवर बंधे रहते थे 1902 में पौडी में जेल की स्थपाना कर दी गयी थी कण्डोलिया के घने जंगलो के बीच डिप्टी कमिश्नर का बंगला भी बन चुका था यहॉ तक कि उस समय कोटद्वार से बद्रीनाथ तक जाने वाले पैदल मार्ग का एक पड़ाव पौडी था 1921 मे पौडी की जनसंख्या 1875 थी जो 1931 तक घटकर मात्र 901 रह गयी जनसंख्य के घटने का प्रमुख कारण पौडी में महामारी फैलना था। इस समय तक गढ़वाल में आवागमन के साधनों को पूर्णतया अभाव था। अतः ब्रिटिश अधिकारियो को दोरा करने के लिए कुलियो की आवश्यकता पड़ती थी, जिसकी पूर्ति के लिए गढ़वालियो से बिना भेदभाव किये कुली का काम लिया जाता था। इस कुप्रथा से समस्त गढ़वासियो में उत्तेजना फैल गयी। जनता के उत्तेजना को शान्त करने का अजीव रास्ता ढूढा जोधसिह रावत ने जो उस समय पौड़ी में तहसीदार थे। उन्होने सब लोगो पर एक–एक रूपया टैक्स लगाया। इस प्रणाली द्वारा जरूरमन्द गरीब लोगों को कुली बनाने की प्रथा अपनायी गयी। डिप्टी कमिश्नर बी0 ए0 स्टोबल को भी इस प्रणाली के प्रणेताओं ने मना लिया। अब पूरे जिले में कुली एजेसी की स्थापना की गयी । इस संस्था का नाम 'ट्रासपोर्ट एण्ड सप्लाई कोआपरेटिव एसोसिएशन' रखा गया। इस एजेन्सी का अस्तित्व आज भी टूटे–फूटे मकानो के रूप में मौजूद है तथा इस स्थान को आज भी एजेन्सी के नाम से पुकारा जाता है सन् 1917–18 में पौड़ी में भीषण अकाल पड़ा। इस विषम परिस्थिति में ईसाई मिशनरियों ने हन्दिुओ को ईसाई बनाने में कोई कसर न छोडी। हिन्दुओं को विवश होकर ईसाई बनने से रोकने के लिए लाला हंसराज स्वामी श्रद्धानन्द व कोतवालसिहं नेगी ने अकाल पीड़ितो के लिए सस्ते दरों पर अनाज की व्यवस्था की तथा 'गढ़वाल रिलीफ फण्ड' की स्थापना की। बाद में इसी रिलीफ फण्ड से बचे हुए पैसो से पौड़ी में दूसरी शिक्षण संस्था डी0ए0वी0 स्कूल की स्थापना की गयी।

सन 1922 से 1947 तक पौड़ी में राजनैतिक गतिविधियों का जोर रहा। 1930 में डिप्टी कमिशन्र ईवटसन का कण्डोलिया मैदान में घेराव किया गया और उसे काले झण्डे दिखाये गये। उसने गुस्से मे आकर आन्दोलनकारियो के ऊपर अपना घोड़ा दौडा दिया। उसने भीड़ को तीतर–बितर करने के आदेश दिया। विरोध स्वरूप जनता ने ईबटसन के ऊपर पथराव किया। इस घटनाक्रम मे प्रमुख आन्दोलनकारियों को पकड लिया गया व उन्हें सजा दी गयी । यह पौड़ी का उस समय एक सबसे बड़ा जुलुस था। ईबटसन द्वारा गढ़केसरी अनुसुया प्रसाद बहुगुणा के साथ जेल मे किये गये दुर्व्यवहार के विरोध मे ही यह आन्दोलन चलाया गया। 13 जून 1932 को संयुक्त प्रान्त के गवर्नर जनरल लार्ड मैलकम हेनी के सम्मान में सरकार परस्त लोगो द्वार कण्डोलिया में ऐ सभा का आयोजन किया गया। इस सभा के आयोजन का प्रमुख लक्ष्य मैलकम हैनी को यह बताना था कि गढ़वाल में काग्रेस का अस्तित्व समाप्त हो चुका है। परन्तु कडे प्रबन्धो के बाद भी जयानन्द भारती ने भरी सभा मे आस्तीन में छिपा तिरगा झण्डा निकालकर हवा में लहराया व हेनी को आभास दिलाया कि गढ़वालमें कांग्रेस का अस्तित्व बरकरार है। 1946 मे पेशावर काण्ड के नायक चन्द्रसिहं गढ़वाली को बड़ी मुश्किलों से गढ़वाल आने की अनुमति मिली। इन्होने भी गढ़वाल आकर आजादी के लिए संघर्ष करना प्रारम्भ कर दिया। आजादी के पश्चात् भी पौड़ी में राजनीतिक, सांस्कृतिक बनने का श्रेय मिला।

अब तक ऊपर के पैरो मे उत्प्रवास के भूपर्यावरणीय पृष्ठभूमि के सन्दर्भ में पूर्ण रूप से पौड़ी जनपद के आर्विभाव में राजनैतिक, प्राकृतिक, सांस्कृतिक आर्थिक, सामाजिक एवं सवैधानिक एवं उद्भव, पराभव आदि पक्षों के बारे में वर्णन किया गया है।

अध्ययन का उददेश्य

पौडी जनपद की पौडी ब्लाक की एवं नगर की उत्तराखण्ड में लगभग मध्य में स्थिति है। आकार की दृष्टि से उत्तर प्रदेश की सरहद बिजनौर जिले को छूते हुए कलश के रूप शिवलिंग लिए फैला हुआ है। अतः पौड़ी जनपद की प्रदेश मे केन्द्रीय स्थिति होने के कारण उत्तराखण्ड एवं अन्य राज्यों से आने–जाने में सुगमता है। कोटद्वार स्वय इस जिले का प्रवेश द्वार के रूप में विख्यात है जहॉ से होकर देश विदेश एवं राज्यों, शहरो के पर्यटक यहॉ की नैसर्गिक सौन्दर्य के बदोलत यहॉ की प्राकृतिक और आत्मिक शान्ति के लिए बद्रीनाथ केदारनाथ, यमनोत्री, गंगोत्री, हेमकुण्ड आदि दर्शनीय एवं धार्मिक स्थानों को देखने आत जाते है। '' कोटद्वार की सड़को के लिए विद्युत व्यवस्था की आपूर्ति रोडवेज के जेनरेटर से 1951 मे की गयी है।'' इस लिए सरकार का प्रयास है कि प्रकृति भिन्न परिस्थितिकीय पर्यटन (ईकोटूरिज्म) विकसित किया जा रहा है। पर्यटन को ग्राम स्तर पर पहुॅचाने हेतु पर्यटन ग्राम योजना प्रस्तावित की गई है। चारधाम यात्रा मार्ग में हरिद्वार, ऋषिकेश को सम्मिलित करते हुए तथा इसके समेकित एवं समन्तिव विकास हेतु धनराशि उपलब्ध कराने हेतु भारत सरकार सहमत है। यहॉ का पर्यटन 'खाकर' कहते है। जनवरी फरवरी में सुबह हाथ पैर धोने के लिए गरम पानी की आवश्यकता होती है। सुबह–शाम अंगीठी जलाई जाती है। कई लोग घर के अन्दर (चाख) अंगीठी पर ही भोजन बनाते है। ऊँची पहाड़ियों पर जनवरी में बर्फ पड़ जाती है। बर्फ 1–2 फीट पड़ जाती

है। अधिकतर पौड़ी, लैन्सडाउन जहरीखाल, वेदीखाल, गुमखाल, नौगॉवखाल, चौवटाखाल, बीरोखाल आदि जगहों पर पड़ती है। काफी ठण्ड और वर्षा होने पर पड़ती है।

पौडी जनपद लम्बाई और चौड़ाई में लगभग बराबर है। इसलिए भूपर्यावरणीय दृष्टि से अनुपम स्वास्थ्यवर्धक एवं उत्तम है। भाबर तराई क्षेत्र छोड़ कर पूरे जनपद में लगभग एक प्रकार की जलवायु का अनुभव किया जाता है।

शोध पद्धति

भौगोलिक शोध में स्थानिक परिदृश्य अध्ययन का मुख्य पहलू होता है। इसमें अध्ययन विशेष के स्थानिक सम्बन्ध प्रतिरूप प्रक्रम गत्यात्मकता एवं परस्पर प्रभाव का विश्लेषण किया जाता है।

उत्प्रवास जनसंख्या अध्ययन का विशिष्ट पहलू है। और अध्ययन प्राथमिक ऑकडो पर बहुत कुछ निर्भर करता है। जन्म–मृत्यु पंजीकरण के अभाव में इस विशेष सूचना के स्त्रोत प्राथमिक आकडो पर ही सम्भव है। हिमालय में जनसंख्या उत्प्रवास अध्ययन का महत्वपूर्ण विषय है। अध्ययन मे प्राथमिक आकडो का संग्रहन उत्प्रवास पर भौगोलिक पर्यावरण एवं विकास के प्रभावों का आंकलन करने के लिए में ग्रामो का चयन विकास और भौगोलिक स्थिति के विभिन्न पक्षो को ध्यान में रखते हुये किया जायेगा। स्थातिक अर्थव्यवस्था एवं पर्यावरण पर उत्प्रवास प्रभाव का आंकलन प्रवासित एवं अप्रवासित परिवारों मे तुलनात्मक अध्ययन पर आधारित होगा। पौड़ी जनपद के जनसख्या का प्रवसन के विश्लेषण के लिए विभिन्न ईकाइयो का आधार किया जायेगा। स्थानिक विश्लेषण के पक्षो को उभारने के लिए उपलब्ध आंकडो के अनुरूप ग्रामस्तर, न्याय पंचायत स्तर पर किया जायेगा। एकल अध्ययन के लिए ग्राम स्तर पर विश्लेषण धरातलीय पत्रकों की पृष्ठ में पर्यावरण पक्षो के लिए प्रस्तावित है।

विधितन्त्र

धारातल और ढाल के आधार पर पौड़ी जनपद को 6 भागो ं में विभाजित करते है।

(1) 0–450 : यह क्षेत्र भाबर ओर तराई क्षेत्र मे आता है जिसमें उपजाऊ मिट्टी पाई जाती है। जिसमें खेती में अच्छा उत्पादन होता है।

(2) 450–900 : यह क्षेत्र पथरीला तथा ऊँचा नीचा है। जिसमें घने जंगल एवं वनस्पतियॉ फैली हुई है।

(3) 900–1500 : यह क्षेत्र अधिकतर स्पर ढाल है। जहॉ खेती एवं निवास के उपयोग में लाया जाता है। इस क्षेत्र में अधिकतर ज0 स0 कृषि पर निर्भर है। इसमें सभी विकास खण्ड स्थापित है।

(4) 1500–2100 : का भूगाग अधिकतर पहाड़ी ऊँचा नीचा दुरूह है अधिकतर वनस्पति विहीन है। इसमें निवास भी कम है।

(5) 2100–2700 : यह क्षेत्र अधिकतर ऊँचे पर्वतीय क्षेत्र यहॉ पर जाडे में बर्फ ओर पाले पड़ते है। ठण्ड पड़ती है। गर्मी में मनोरम हवा एवं स्वास्थ्यवर्धक होती है।

(6) 2700–3500 : यह बहुत ही ऊँचे पहाडो भाग है। जहॉ जाड़े मे अधिकतर बर्फ पड़ जाती है। यहॉ काफी दिनों तक ठण्ड पड़ती हैं वनस्पति कही पर अधिक और कही वनस्पति विहीन भी है। जंगली जानवर पाये जाते है।

(1) less than 200 मी0 : यह क्षेत्र पाटलीदून रौना हल्दू पडाव कोठरीदून, गोहरी पडाव इत्यादि क्षेत्र आते है। यहॉ पर ढाल 200 मीटर प्रति कि0 मी0 है

(2) 200–400 मी0 : यहॉ घरातल का ढाल 200 से 400 मीटर प्रति किमी0 है। यह नैनी डाण्डा, रिखनाल, कोटद्वार, सतीखाल, कलाल घाटी, ममगॉव इत्यादि क्षेत्र आते है।

(3) 400 से अधिक : यहॉ धरातल का ढाल 400 मीटर प्रति कि0मी0 अधिक ढाल वाले क्षेत्र आते है। इस ढाल में लैन्सडाअन दूधा तोली द0 रिवर्स, चाराकोट कुण्ड अलोला, दूॅगा जयहरीखाल कल्जीखाल आदि पहाडी क्षेत्र आते है।

मिट्टी

गढ़वाल पहाड़ी जनपद है। यहॉ पर वैज्ञानिक आधार पर दो प्रकार की मिट्टी पाई जाती है।

(1) पहाड़ी मिट्टी – यह मिट्टी ऊपरी भाग में (पौडी ब्लाक, कोट ब्लाक, पावॉ ब्लाक, थली सैड़, ब्लाक, द्वारीखाल जयहरीखाल एकेश्वर विकासखण्ड पोखडा, रिवर्सू विकासखण्ड कल्जीखाल विकासखण्ड में पहाडी मिट्टी पाई जाती है। यह पहाडी ढलानो पर भूरे रंग मे पाई जाती है। कम उपजाऊ होती है।

(2) पहाडी तलहटी मिट्टी – यह मिट्टी लौह युक्त तथा जीवाश्म युक्त होती है। यह शिवालिक पहाड़ियॉ तराई भाबर क्षेत्र में हल्की, वलुई तथा छिद्रयुक्त मिट्टी होती है। यह मिट्टी दुगडुा विकास खण्ड, यमकेश्वर विकासखण्ड खण्ड में पाई जाती है। बहुत उपजाऊ होती है।

जलवायु

पौडी जनपद सम्पर्ण पहाडी एंव जगल है। यहॉ पर गर्मी में सबसे अधिक तापक्रम 29,8^{0}C तथा जाडे में 05,0^{0}C तापक्रम पाया जाता है। वर्ष 2001 में उच्चम तापमान 32. 1^0 न्यूनतम 0. 02^0 सेन्टीग्रेड था। गर्मी सबसे अधिक तापक्रम 29.8^0 C चारकोट नैनीडाण्डा क्षेत्र में रहती है। जाडे में सबसे कम तपक्रम 05^{0}C कुण्ड और धारा क्षेत्र में रहता है। दोनो तापक्रम वाले क्षेत्र लाइन द्वारा प्रभावित क्षेत्र को प्रदर्शित करती है। सामान्य वर्षा वर्ष 2001 मे 1706,8 मी0 मी0 थी।

वार्षिक वर्षा

पौड़ी जनपद वार्षिक वर्षा के आधार पर तीन क्षेत्रो मे बॉटते है।

(1) Below 1400 मि0मी0
(2) 1400–2000 मि0मी0
(3) 2000 मि0मी0से अधिक

1400 मिली मीटर से कम वर्षा वाला क्षेत्र

यह क्षेत्र पौडी जनपद का दुगडुा ब्लाक एवं यमकेश्वर विकासखण्ड तथा पौडी ब्लाक, एकेश्वर, ब्लाक, रिवर्सू विकाखण्ड थलीसैड एव बीरोखाल का क्षेत्र आता है। जहॉ साल भर का औसत वर्षा 1400 मिली मीटर के लगभग होती है।

1400–2000 मिली मीटर वर्षा वाला क्षेत्र

इस क्षेत्र के अन्तर्गत कुण्ड, कान्सखेत, देवगढ़ी दीवाडाण्डा, रिखणीखाल, पन्डीथार गॉव इत्यादि क्षेत्र आते है।

200 मिली मी0 से अधिक वर्षा वाला क्षेत्र

इस क्षेत्र के अन्तर्गत अधिक घने जंगल वाले क्षेत्र आते है। इसके अन्तर्गत कान्डी यमकेश्वर विकासखण्ड का कुछ भाग दुगड्डा विकासखण्ड का कुछ भाग एवं नैनीडाण्डा का कुछ बदियार गॉव, माग, लैसडाऊन का भाग द्वारीखाल, रिखडीखाल, मण्डल, मण्डीया पानी आदि क्षेत्र आते है।

वनस्पति वन

उत्तरांचल एक वन प्रदेश है। यहॉ की कुल भूभाग के 63ण्99 : प्रतिशत क्षेत्र वन क्षेत्र है। कुल वन भूमि 46: राजकीय वन है। जबकि पौडी जनपद में 59: वन क्षेत्र है भारत में लगभाग 45,000 किस्म की वनस्पतियॉ पाई जाती है जिने से लगभग 25000 किस्म की वनस्पतियॉ हिमालय क्षेत्र में पाई जाती है। उत्तरांचल में जड़ी–बूटी का भण्डार है। यहॉ के वनों से इमारती लकडी, लीसा व वन उपज प्राप्त होती है। समूचे भारत में 89 राष्ट्रीय पार्क और 490 अभयारण्य है जिसमें से उत्तराखण्ड में 6 राष्ट्रीय पार्क तथा 6 वन्य जीव विहार है जिसमें से 2 पार्क गढ़वाल जनपद में लगते है। यहॉ पर्वतीय वन पाये जाते है।

प्रशासनिक दृष्टि से वनों के प्रकार

1. संरक्षित वन
2. आरक्षित वन
3. रक्षित वन
4. अवर्गीकृत वन
5. पंचायतीव वन
6. निजी वन/नगर पालिका/वन क्षेत्र पौड़ी में 4,44,341 वर्ग किलोमीटर में वन फैला हुआ है।

निष्कर्ष

पौडी जनपद लगभग 29^0 25′ उत्तरी से 30^0 18′ उत्तरी अक्षांश तक एवं 78^0 12′ 45 से 79^0 14′ 30′ पूर्वी देशान्तर के मध्य स्थित है। पौडी जनपद के उ0प0 में देहरादून पं0 में हरिद्वार दक्षिण प0 में उ0प्र0 का बिजनौर जिला का क्षेत्र फैला हुआ है। जो पौडी जिले के दुगड्डा ब्लाक से लगा हुआ है। पौडी जनपद के पूर्वी सीमा पर द0 में अल्मोडा जिला एवं उत्तर पूर्व में चमोली जिला की सीमा मिली हुई है। पौडी जिले से उ0 पू0 में रूद्रप्रयाग जिला लगा हुआ है। जो उ0प्र0 में टिहरी जिला की सीमा अलकनन्दा नदी द्वारा अलग होता है। पौडी जनपद की, पौडी ब्लाक की एवं नगर की उत्तराखण्ड राज्य में लगभग मध्य में स्थिति है। ऊँची पहाड़ियो पर जनवरी में वर्फ पड़ जाती है। भाबर तराई क्षेत्र छोडकर पूरे जनपद में लगभग एक प्रकार की जलवायु का अनुभव किया जाता है।

यहॉ का धरातल एवं ढाल 450 मीटर से आरम्भ होकर 3500 मीटर तक पाया जाता है। जिसमें तराई का उपजाऊ मैदान, घने जंगल, ढाल, जो निवास के लिए उपयुक्त है। कुछ भाग वनस्पति विहीन तथा दुरूह है। ऊँचे पहाड़ियो पर जाडे में बर्फ पड़ जाती है। जंगली जानवर पाये जाते है। यहॉ स्लोप, ढाल 200 मीटर पर कि0मी02 से लेकर 4002मीटर प्रति कि0मी0 से अधिक है। 200 मीटर मे पाटली दून, कौठरी दून, हल्दू पड़ाव रोना पडाव गौहरी पड़ाव आदि क्षेत्र आते है। मध्य मे सतीखाल कोटद्वार, रिखनाल, नैनीडाण्डा इत्यादि क्षेत्र आते है। 400 मीटर से ऊपर से वाले ढाल में लैन्सडाऊन दूधातोली, कुण्ड, अमोला, जहरीखाल कल्जीखाल आदि आते है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

Anita (1989): चमोली जनपद में भूगोल का अध्ययन, गढ़वाल विश्वविद्यालय श्रीनगर गढ़वाल का अप्रकाशित शोध कार्य।

Bhend, A.A and kanitkar (1982) principles of population studies Himalayan Pub House, Bombay

Bnjamin Bernard (1969) demographic Analysi. George Allen and union. London.]

Bunge, w (1968) Theoretiacal Geography, lund studles in Geograph, Lund (Sweden)

Chandana, RC. (1980) : Introduction of Population Geography, Kalyani Publishers, New Delhi.

Clark J.I (1965) : Population Geography, Pergamon Press, Oxford

Cox P.R. (1976) : Demography, Cambridge University Press, Cambridge